International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020

Indian Knowledge System and New Education Policy: 2020

सागर सिरोला[1], डॉ. देबकी सिरोला[2]

[1]शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (263001), उत्तराखण्ड।

[2]सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (263139) नैनीताल, उत्तराखण्ड।

सारांशिका

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का मूल आधार ही भारतीय ज्ञान परम्परा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारतवर्ष में प्राचीन काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है। इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर विभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबन्धन एवं विज्ञान विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान भण्डार हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा, वागीशा एवं भारती इत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि प्राचीन समय में इस परम्परा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था। भारतीय ज्ञान परम्परा प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान एवं विज्ञान, लौकिक एवं पर-लौकिक, कर्म एवं धर्म तथा भोग व त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है। इस प्रकार प्राचीन समय से ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परम्परा का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक एवं सूक्ष्म रहा है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अन्तर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन-अध्यापन में विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों के समृद्ध आलोक में निर्मित की गयी है। इसके आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परम्परा को भी केंद्रीय स्तम्भ माना गया है। इस दिशा में नयी पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभिनव पहल की है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक अनुशासन विषय की पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित ऐसे संप्रत्ययों को जोड़ा जा रहा है जिनके अध्ययन द्वारा निश्चित रूप से नयी पीढ़ी के विद्यार्थियों में भारतीय होने का गौरवबोध जागृत होगा।

संकेताक्षर- सनातन ज्ञान, ज्ञान परम्परा, शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्रस्तावना

संस्कृत, संस्कृति एवं भारतीयता केवल मात्र शब्द नहीं अपितु भारतवर्ष की प्राचीन शिक्षा परम्परा की आत्मीयता के भाव हैं। 'शिक्षा' व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय प्रगति, सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान हेतु अनिवार्य है। भारतवर्ष के महान गुरुजनों ने शिक्षा के इस गहन महत्व को समझ लिया था। इसी के फलस्वरूप भारत के वैदिक काल में शिक्षा प्रणाली की सुंदर व्यवस्था की गयी थी, जिसका मुख्य आधार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली थी। प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को विश्व की प्रथम सनातन धर्म की शिक्षा प्रणाली के रूप में जाना जाता है। यह एक प्रकार से आवासीय विद्यालय शिक्षा प्रणाली के समान ही थी, जिसकी उत्पत्ति भारतीय उप महाद्वीप में ईसा से लगभग 5000 वर्ष पूर्व की मानी जाती है। इन आश्रमों में अनादि काल से अनेकों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते रहे और यह व्यवस्था भारतवर्ष में 'गुरु-शिष्य परम्परा' के रूप में एक लम्बे समय तक चली। भारतवर्ष की इस महान शिक्षा परम्परा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया तथा सत्यनिष्ठता, विनम्रता, आत्मनिर्भरता, अनुशासन एवं परस्पर प्रेम व सम्मान जैसे मूल्यों पर बल दिया। भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने विशाल वैदिक साहित्य को सुरक्षित रखा तथा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में मौलिक विचारकों एवं विद्वानों को जन्म दिया, जिनसे भारतवर्ष का मस्तक आज भी यश व गौरव से उन्नत है। इस प्रकार हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा अनादि काल से ही सतत, दीर्घकालिक एवं चिरस्थायी रही है, जो समस्त मानव जाति के कल्याण हेतु प्रयास करती है। अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनरावलोकन करना अति आवश्यक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता की आवश्यकता

प्राचीन गौरवमयी भारतीय ज्ञान परम्परा सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करने वाली है। प्राचीन भारतीय कला के साक्ष्य चरों वेदों, वेदांग, उपनिषद, श्रुति, स्मृति से लेकर रामायण एवं श्रीमदभगवद् गीता में विद्यमान हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध एवं जैन काल में भी रही। इसके अंतर्गत महान गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से अनेकों वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात व विश्लेषित कर नए ज्ञान को संश्लेषित किया गया। प्राचीन काल की ज्ञान प्रणाली, परम्पराएँ एवं प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान एवं विदेशों से आ रहीं तथा-कथित नवीन खोज जो हमारे ग्रन्थों में पूर्व से ही उल्लेखित हैं, वह सब भारतीय ज्ञान परम्परा के समृद्धशाली होने प्रमाण है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिदृश्य में और भी अधिक प्रासंगिक है, जो व्यक्ति को कर्तव्य-बोध, कर्तव्यपरायणता, स्थिरता एवं तनाव प्रबंधन इत्यादि के समायोजन हेतु व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ विविध ज्ञान-विज्ञान, लौकिक एवं पारलौकिक रहस्यों को समझने के लिए परिशुद्ध अनुदेशन का कार्य करती है। इसमें निहित वेद एवं उपनिषद, दर्शन एवं प्रबन्धन, ज्ञान एवं विज्ञान, धर्म एवं कर्म तथा योग एवं अर्थ से सम्बन्धित विशाल ज्ञान भण्डार का अनुप्रयोग विश्व कल्याण एवं मानवता के उद्धार हेतु किया जा सकता है। अतः अब समय है कि भारतवर्ष के वर्तमान अमृत काल में भारत द्वारा विश्व को दिए गए ज्ञान का संवर्धन किया जाए तथा भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक को भारत की मूल संस्कृति एवं प्राप्त ज्ञान से जोड़ा जाए।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका

भारतवर्ष की ज्ञान परम्परा वर्तमान समय में विमर्श के केंद्र में है, क्योंकि केंद्र सरकार की नयी शिक्षा नीति 2020 ने भारत के सांस्कृतिक मूलाधारों को ठीक से जानने व समझने पर बल दिया है। इसके अंतर्गत पारम्परिक ज्ञान, कला, कौशल एवं मूल्यों को

शिक्षा से जोड़ने एवं उसके नवीन प्रयोगों के लिए संस्तुति दी गयी है। चूँकि भारत में समग्र एवं बहु विषयक माध्यम से ज्ञान अर्जन की प्राचीन परम्परा रही है। अतः प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान एवं विज्ञान की समृद्ध परम्परा के अनुशीलन में यह शिक्षा नीति शिक्षक प्रशिक्षण, समग्र एवं बहु अनुशासनात्मक शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके कार्यान्वयन हेतु वर्तमान समय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा प्रकोष्ठ का निर्माण किया गया है, जिसका लक्ष्य स्वदेशी ज्ञान एवं विद्या परम्परा को प्रोत्साहित करना एवं आगे बढ़ाना है। इस दिशा में वर्ष 2020 में क्रियान्वित की गयी नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध संप्रत्ययों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। इसके लिए वर्ष 2022-2023 के बजट में भारतीय ज्ञान परम्परा के अध्ययन, संवर्धन एवं अनवेक्षण के लिए निर्धारित राशि बढ़ाकर ₹20 करोड़ कर दी गयी थी। इसके अतिरिक्त वर्ष 2025 तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग 15 लाख अध्यापकों को भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रशिक्षण भी देगा। विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर पर आयोग ने वर्तमान में एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी आरम्भ किया है। इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों यथा : स्वयं पोर्टल, स्वयंप्रभा, ई-दीक्षा, ज्ञानदर्शन इत्यादि के साथ-साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से भी इसके प्रचार-प्रसार का प्रावधान इसमें किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि भारत को बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य एवं कुशल विद्यार्थियों के निर्माण के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा को वापस लाने की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों को उनकी आरंभिक अवस्था से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के साथ नैतिक व चारित्रिक गुणों से युक्त किया जा सके। यह नीति भारत की समृद्ध विविधता, संस्कृति एवं आवश्यकताओं पर विचार करते हुए भारत के युवाओं, शिक्षक एवं शिक्षार्थियों को सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक व रचनात्मक अधिगम के साथ-साथ परस्पर सहयोग, एकता तथा भ्रातृत्व की भावना के विकास पर बल देती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के विकास के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका उल्लेखनीय है। यह विद्यालयी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास हेतु आवश्यक सुधार प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही विद्यार्थी की देखभाल करना, शिक्षा संरचना में और अधिक सुधार करना, शिक्षण प्रशिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाते हुए परीक्षा प्रणाली में सुधार करना एवं प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित ज्ञान को नवीन पाठ्यचर्या में लाना है। इसके लिए यह शिक्षा के 5+3+3+4 प्रारूप को अपनाते हुए विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के विकास को महत्वपूर्ण मानती है। इसके अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित ज्ञान-विज्ञान एवं दर्शन के समन्वय पर बल दिया गया है। यदि इस शिक्षा नीति का क्रियान्वयन सफल व सुनियोजित रूप से होता है तो यह शिक्षा नीति निश्चित रूप से भारत को वैश्विक पटल में एक नए आयाम में ले आएगी।

संदर्भ सूची-

1. झा कन्हैया (2022), "शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा की अनिवार्यता" दैनिक जागरण संपादकीय आलेख, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा (उ0प्र0)। https://www.google.co.in/amp/s/www.jagran.com/lite/editorial/apnibaat-ncr-the-imperative-of-indian-knowledge-tradition-in-the-education-system-22412895.html

2. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
www.education.gov.in
3. शर्मा संगीता एवं पाण्डेय जय शंकर (2023), "उच्च शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषताएं एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुशीलन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भूमिका" ह्यूमैनिटीज एंड डेवेलपमेंट, वॉल्यूम 18, नंबर-01, जनवरी-जून 2023।
https://humanitiesdevelopment.com/index.php/had/article/view/124/115
4. त्रिवेदी राकेश (2014), "भारतीय शिक्षा का इतिहास" ओमेगा पब्लिकेशन (दरियागंज) नयी दिल्ली।
5. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/भारतीय_ज्ञान_परम्परा
6. https://www.google.co.in/url?sa=t&source=web&rct=j&opi=89978449&url=https://rajbhawan.rajasthan.gov.in/content/dam/rajbhawan/pdf/speech/2020/September/speech%252022.%25209%2520.%25202020%2520(2).pdf&ved=2ahUKEwjG6J_288CEAxWkU2wGHeYmDvIQFnoECBwQBg&usg=AOvVaw0ZSuU1UDFLZH8lBss_pb7g